३८. "एक आवश्यक जानकारी"

A. जो तस्वीरें प्रत्यक्ष की गई है - यह केवल जानकारी हेतु ही है - सभी काल्पनिक हैं और बहुत कालीन है । इनकी पूजा - अर्चना - मत्थे टेकना - अरदासे करना गोल - गोल घूमना - ध्यान करना इत्यादि सभी कर्मकाण्ड वर्जित है ......!

"वडिये हथ दलाल के मुसफी एह करेयी"

यह सब वाणी जो केवल लफज रूपी मार्गदर्शन हेतु प्रत्यक्ष की गई हैं उस पर भी लागू होता है - बाणी अर्थात आवाज़

- मार्गदर्शन यानी के गुरु - यह सत्य को बयान करती हैं - इसलिए सत + गुरु हैं - हैं अर्थात यह तीनों कालों में सदा निरंतर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहती हैं - सब कुछ मिट जाने के बाद भी यह एक "नाद अनहद" के रूप में घूमती हैं - जिस के अनंत प्रकार - वर्जन इत्यादि हैं । यह इतनी सूक्ष्म है कि इसका ना तो कोई भार है और ना ही यह किसी भी प्रकार के उपकरणों या तरीको - प्रकारों द्वारा देखी या जानी ही जा सकती है .....? लेकिन सत्य केवल यह है कि यह सुनी भी जा सकती हैं - देखी भी जा सकती हैं और सूंघी भी जा सकती हैं.....! अर्थात एक रागमई - दुर्लभ सुगंधित प्रकाशित आवाज विशेष जो निरंतर अपना कार्य करने में ही मशगूल विशेष रहती हैं, अर्थात उत्पत्ति - पालना - हज़म करना और फिर पहले से भी बढ़िया - बेहतर - फिर से उसे उत्पन्न - प्रकाशित करना यह सिलसिला निरंतर बना - चलता ही रहता है । इस क्रिया में उसे किसी की भी मदद या जरूरत की आवश्यकता ही नहीं है । एक इसी के सिवा और कुछ है भी तो नहीं - फिर इसका कोई आज अथवा अंत भी नहीं हैं - अतः जो कुछ भी लिखता अनुभव होता है वह सभी कुछ उस का ही वर्जन मात्र होता है.....! जब उसके सिवा और कुछ है ही नहीं तो यह फिर स्थूल प्रकृति इत्यादि तत्व और अनंत ब्रह्माण्डो का पदार्थ विशेष कहां से आता है.....? यह एक समझने - विचारने वाली बात विशेष है.....? इन सभी उलझाने वाले विचारों का सटीक एक ही जवाब है - कि यह एक प्रोग्राम रूपी सॉफ्टवेयर है जो एक

"निश्चित कोड" पर काम करता हैं । इस कोड में कोई भी दखल कर ही नहीं सकता क्योंकि इस एक "बेसिक कोड" में अनंता-नंत निरंतर विभिन्न प्रोग्राम चलते ही रहते हैं जो कि अपने - अपने अलग - अलग कोडो में बंधे हुए एक - दूसरे - तीसरे इत्यादि अनंत प्रोग्रामों के पूरक बने हुए काम करते ही रहते हैं "निरंतर बदलते हुए (एक वायरस की तरह से)" - परिस्थिति अनुसार मांग की पूर्ति करने हेतु .....! इसमें हार्डवेयर जो प्रत्यक्ष होता है - अनुभव मानसिक - व्यवहार हेतु वो भी एक बहुत बड़ा मायावी डिस्ट्रक्शन ही है - क्योंकि वह भी एक निश्चित कोड से बंधा हुआ मात्र एक प्रोग्राम ही हैं....! जैसे आपकी सोच - विचार केवल आप के ही अंदर रहती हुई एक विचारधारा के रूप में चलती - बहती रहती हैं - उसे किसी भी हार्डवेयर या साधन इत्यादि की आवश्यकता ही नहीं हैं - उसी तरह से यह पूरा "प्राकर्ण" भी उस एक के अंदर में ही मानसिक रूप से निरंतर चलता ही रहता है - उसी चरित्र में जिसमें प्रोग्राम प्रत्यक्ष होते चलते रहते हैं.....!

"ऐह जो दुनिया सिहर मेला - दसतगीरी नाह ।"

केवल यही एक सनातन - शाश्वत सत्य विशेष है - कोई जोक अथवा प्रमाद नहीं हैं.....! जो इस प्रोग्राम में खिलवाड़ करने की कोशिश भी करते हैं वैचारिक रूप से ही सही - उन्हें भी इसका बहुत बड़ा खामियाजा जुर्माना भुगतना ही पड़ता हैं - युगों - युग कलांतरों के बाद भी तड़पने हेतु मजबूर होना ही पड़ता हैं

अर्थात इस "सहर मेले" में कुछ ना होने के बाद भी इस कोड रूपी प्रोग्राम का एक सूक्ष्म सा जर्रा विशेष भी हिलाया ही नहीं जा सकता हैं.....! फिर बड़े-बड़े पैगंबरों – मसीहो – गलियों – धर्मो – मार्गो - पंथो इत्यादि के दावों - मुक्ति या सचखंडों के बारे में क्या विचार किया जा सकता है.....! कहावत है कि काणा अंधों पर राज करता है या तो सारी की सारी दाल ही काली साबित हो रही है अर्थात इस काल में तो ऐसा जग देखिया "गंधारी" सब सुख बाटे "महा-अंधारी.....!" अर्थात जो केवल रोज स्कूल के चक्कर ही लगाता रहता है - किताबों को हाथ लगाने से भी डरता है - उसके इर्द - गिर्द गोल गोल घूमता ही रहता है – पत्थरों – ग्रंथों - पोथियों इत्यादि को मत्था टेकता है - सूक्ष्म जीवाणुओं के मल - मूत्र से भरे तालाबों सरोवरो में डुबकी लगा इत्यादि कर्मकांडों को निभा कर ही स्वयं को मुक्त - आज़ाद समझकर "स्नातक" विशेष साबित कर देता है.....? और फिर केवल पढ़ -सुन - गा कर तो बड़ा डॉक्टरेट सनातकी स्वयं को साबित करने लगता है और फिर उसका अंह उसे मान हेतु गुरु – सतगुरू -प्रोफेसर इत्यादि बनने को मजबूर कर ही देता हैं.....? फिर लिखा हैं कि गुरु – सतगुरू - परमात्मा हैं - स्वंय ही सिद्ध होने लगता है.....! यहां भी बात खत्म नहीं होती - जो कोई इससे भी आगे स्वंय को निकाल लेते हैं अर्थात ड्रेस इत्यादि कोड को फॉलो करने लगते हैं - यह तो समाज पर राज ही करने लगते हैं

- डॉक्टरेट स्नातकीयों से भी ऊपर "लेजंड" साबित होने लगते हैं.....? फिर इनके अनुयायियों का भी तो कुछ हक बनता ही हैं इनकी बनाई -कही गई अविनाशी सल्तनतों में एक अदना सा निजी प्लाट प्राप्त करने हेतु.....? ड्रेस कोड में इनके रूपो - आवरणो का विचित्र अनोखा ही संयोग है - दाड़ियों की लंबाईयों - डिजाइनों - सिरों का भी अनोखा ही संयोजन हैं - कि जानवरों की पूंछ भी इन्हें देखकर शर्म से सिकुड़ कर बेचारी थोड़ी टेड़ी सी होकर मुड़ ही जाती है - और फिर कितना भी प्रयत्न कर लो वह कम से कम सीधी होने का तो नाम लेने से भी कतराती ही है.....! सत्य तो यह हैं कि सृष्टि के सभी बने हुए परमात्मा मिलकर भी इस प्रोग्राम के एक अदने से भारहीन कण "रूह" को केवल हिलाने में भी घौर असमर्थ विशेष ही साबित होते हैं.....? लेकिन दावा सभी नेता गुरु - सतगुरूओ - देवो - देवीयों - पैगंबरों - मसीहों इत्यादि का सुख - मुक्ति वगैरह - वगैरह देना बांटना ही हैं - और वह भी केवल फ्री यानी कि मुफ्त में.....! इस घोर कल में महाकाल की और कैसी परिभाषा - परिभाषित की जा सकती है.....?

"सुर-नर-मुन-जन अमृत खोजते - सो अमृत गुर पाही जीओ ।
छोडह वेष- भेख - चतुराई - दुबिधा - इह फल नाही जीओ ।"

अब यह सब आपका निजी विषय विशेष है - लेकिन केवल आपको अपने निजी अंतर मन में झांकने विचारने की अवश्य आवश्यकता विशेष है - कि आप इन लफ्जों का क्या और कैसा अर्थ विशेष निकालते - समझते हैं और फिर इस परम सुख - मुक्ति विशेष को कहां - और कैसे तलाशते हैं.....? सोचना जरूरी है कि आप किन विचारों - व्यवहारों - संस्कृतियों इत्यादि के पीछे भाग रहे हैं - किन को माला - चढ़ावा - पहना - चढ़ा रहे हैं.....? साबित एक ही बात होगी आपकी आंख बंद होते ही - केवल "मृग मरीचिका ।" आपको जल्द ही फैसला करना होगा क्योंकि प्राणशक्ति तो निरंतर खर्च होती ही जा रही है और इस दौड़ भाग में आप का "आधार कार्ड" तो निरंतर घिसता - घटता ही चला जा रहा है.....! अकाउंट जीरो होते ही कोई ताकत आपको बड़ी बुरी तरह से "कुत्ता घसिटी" करेगी - अगर कुछ भी कमाया हुआ ना हुआ तो.....? तब आपके दुखो - कष्टों का - जिनका आपको भान तक नहीं है - उन्हें अनंत काल तक के लिये भोगने पर मज़बूर होना ही पड़ेगा.....? सुख भोगने का तो आनंद है उससे भी कहीं गुना बड़ा भारी दुखों - अभावों का मुकुट आपके सिर पर धर ही दिया जाएगा - जो शैतान की आंख की तरह से कभी खत्म होने का नाम ही नहीं लेगा.....! फैसला तो मार्गदर्शन रूपी लिखित वाणी विशेष में पहले से ही दिया गया है - पर आपको गोल - गोल घूमने से फुर्सत मिलेगी तभी तो आप विचार

पाओगे.....! सोचो क्या विद्यार्थी के केवल स्कूल के चक्कर लगाने - किताबों को मत्था टेकने - ड्रेस रूपी कोडो इत्यादियो के पालन करने - भूतकालीन रूहो के ध्यान - अर्चना करने से क्या आप विद्यार्थी को अगली क्लास में चढ़ा देते हो.....? फिर डिग्री डॉक्टरेट की कौन सी कल्पना साकार किए बैठे हो.....? आपके गाड़े चढ़ावे पर कौन अय्याशी कर रहा है जरा विचारों देखो - राजे तो आपने खत्म कर दिए - फिर भिन्न-भिन्न निकृष्ट अपराधी से भी निचली श्रेणी में गर्क महानुभव को तख्तों - गद्दियों पर विराजमान कर दिया है.....? वो भी आपने किसी कीमत पर किया है.....? अपने अनमोल दुर्लभ अवश्य मनुष्य जन्म को खर्च विशेष कर - आप स्वयं तो निरंतर डूबते जा रहे हो - यह आपको ना तो दिखाई देता हैं और ना ही आप कुछ समझना ही चाहते हो - भेड़ चाल की तरह से भीड़ देखी और भीड़ बढ़ाने में ही सुबह को लाभान्वित समझने की भूल कर बैठते हो.....! "सच" भीड़ में कभी भी नहीं होता - अगर कुछ होता है तो केवल डिस्ट्रैक्शन.....? जिसका शिकार आप अनंत कालों से होते आ रहे हो.....! विद्यार्थी तो कुछ सालों विशेषों में अगली जमात में चढ़ता हुआ एक दिन अवश्य डॉक्टरेट हो ही जाता है - पर बिना पढ़ा फर्जी डिग्री प्राप्त किए हुआ - फर्जी विश्वविद्यालयों का जीव कैसे पढ़ाने वाला बना दिया जाता है.....? इसका सारा का सारा श्रेय तो केवल आप महान महानुभाव को ही जाता है.....! अर्थात अगर आप मुंडवाना चाहोगे

तो क्या मुंडने वाले उत्पन्न नहीं हो जाएंगे "खतपतवार" की तरह से.....? पर अब पछताए क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत.....! ये बाणी – शब्द – नाम – अमृत – कीर्तन – नाद – अनहद वगैरह – वगैरह मिलेगा तो केवल आपको उस डेरे – स्थान – धर्म –शरीर – चेहरे वगैरह में – जो आपको जब आपके शीशा देखने पर दिखाई देता है अर्थात केवल और केवल आपके ही अपने शरीर में.....?

"सब कुछ घर में बाहर नाही – बाहर टोले सो भ्रम भुलाई ।"

"घर ही में अमृत भरपूर हैं.....! काइया महल–मन्दर–घर हर का –तिस में रखी ज्योत अपार ।"

और एक आप महान हो कि भूतों के ही पीछे भागे जा रहे हो – जिस साधन – ताकत के नशे में आप नाच रहे हो यह तो जीते जी ही साथ नहीं देती फिर मरणोपरांत क्या विचारा जा सकता हैं.....? आपको अपनी आजादी के लिए लड़ाई लड़नी ही होगी.....? "सूरा" सो पहचानिए जो लड़े "दीन" के हेत.....? यहां "दीन" का भाव आपके स्वयं की आत्मा हेतु कहा जा रहा है.....? ना कि दीन – हीन – गरीब – मजबूर इंसान हेतू.....! सूरा यानी सूरमा – लड़ाई लड़ने वाला बहादुर विशेष – केवल वही आत्मा विशेष हैं जो पूरी ईमानदारी से निरंतर – पूरे मनुष्य जन्म में – इस प्राकृतिक तत्व रूपी पिंजरे से स्वयं की आत्मा को मुक्त

कराने हेतु प्रयत्नशील विशेष रहता हैं - बिना एक भी प्राण को व्यर्थ किए बिना.....! ऐसा निरंतर जन्म-जन्मांतर प्रयास विशेष ही कभी ना कभी किसी काल काल विशेष में सफल हो ही जाता हैं.....! केवल वही पढ़ाने योग्य शब्द - बाणी रूप होता है - शेष सभी कुछ केवल एक मजाक अथवा मनोरंजन मात्र ही साबित होता है प्रत्येक काल में.....! एक आप महानतम हैं कि स्वयं को मुक्त किए बिना ही पढ़ाने - देने में मशगूल हुए जा रहे हैं.....? एक अदना सा गाने - पढ़ने - बताने वाला करोड़ों की तो चलती फिरती गाड़ियां लिए फिर रहा है फिर सोचो बाकी उसने कहां-कहां नहीं ठूस रखा होगा और फिर वज़ीरो का क्या विचार किया जाए.....? इन्हें लगता है कि इन्होंने जगत को ठग लिया - आवरण चिट्टा है कोई कुछ नहीं जानता क्योंकि बदले में इन्हें साधन -ताकत जो उपलब्ध होती बढ़ती जाती हैं.....? लेकिन ये यह नहीं जानते कि किसी और ने इनको ठग रखा है - निरंतर इनकी पिछली अनंत काल की सच की कमाई को खर्च करवा कर साधन - ताकत दे दी जो आंख मुदंते ही मिट्टी हो जाएगी और ब्याज के रूप में पूरा दुर्लभ मनुष्य जन्म ही केवल हज़म विशेष ही नहीं कर लिया बल्कि आगे के अनंत काल के इनके जन्म भी केवल निकृष्ट जूनो - घोर भयावह नर्कों विशेषो को रोशन करने हेतु एडवांस में बुक विशेष कर लिया है.....? तब फिर गाना-नाचना और कूद - कूद कर गाली-ताली बजाना.....!

"कूड़ बोल मुरदार खाइ - अवरी नो समझावण जाइ ।
मुठा आप मुहाए साथै - नानक ऐसा आगू जापै ॥"

पर एक बात तो रह ही गई कि इनके अनुयायियों - साथियों - मददगारो इत्यादि संबंधों - संबंधियों का क्या होगा.....? कोई भी मास्टर कंप्यूटर इसे बताने में असमर्थ ही हैं......! इस अंजाम तक पहुंचने हेतु इन आगुओ का मान - सम्मान - माला - चढ़ावा इत्यादि बहुत ही जरूरी है....! इसलिए इन की प्रत्येक बलात्कारी ठगी पर भी इनको बदले में एक बड़े से विशेष साधन - ताकत की घोषणा अवश्य ही की जाती है - ताकि इनका हौसला पहले से बढ़कर बुलंद साबित होता रहे...!

B. एक बात हमेशा से याद रखिए कि सुख केवल सत्य से संबंधित हैं और दुखः केवल छल - झूठ से.....? सत्य केवल धुन - वाणी है - संसार केवल झूठ एक साफ्टवेयर रूपी कोड से बंधा निश्चित प्रोग्राम विशेष है जो निरंतर बदलता - मिटता तथा प्रत्यक्ष होता रहता है - इसीलिए इसे अर्न - करना फिर इसे पकड़ कर रखना - फिर यह सब कुछ मेरे पास ही रहे और फिर स्वयं को दाता साबित करते रहना और सभी दूसरों को गुलाम या वर्कर इत्यादि नीचा समझना - बनाना - बस इसी डिस्ट्रैक्शन में यह अनमोल मनुष्य जन्म झूठ - पाप की भेंट चढ़ जाता है.....? जिन्हें सदियों

तक याद रखा जाता है अथवा स्मारक इत्यादि बनाए जाते हैं उन सभी की भी प्रत्यक्ष होने वाली रूहे अपने निजी स्वार्थ - इच्छाओं इत्यादि की पूर्ति हेतु निरंतर दुरुपयोग करती रहती हैं तथा कालांतर से सभी अर्थ - भाव - व्यवहार इत्यादि की कब्र विशेष बना दी जाती हैं वो भी डायमंड - सोने की और भारी पाखंड- पूजा - माला - अर्पण या और कई तरह की चैरिटियां चला कर पूरे समाज को गुमराह किया जाता रहता है.....? आप सोच भी नहीं सकते कि जिनकी आप पूजा - अर्चना इत्यादि कर रहे हैं उनके इस समय की स्थिति क्या हैं.....? इनमें से ज्यादातर रूहों की बड़ी ही भयानक और दर्द भरी स्थिति हैं.....! क्योंकि किसी कारण ऐसा संयोग बन गया और यह मसीहे साबित होने लगे - कोई निजी सत रूपी कमाई तो कमानी थी करना तो एक तरफ रहा यह जीते जी इस सत के नजदीक भी नहीं गए.....! एक तरफ पहले का कमाया हुआ सत तो इस जहर पर खर्च हो गया और अब कुछ किया नहीं - फिर आगे सुख की कल्पना भी कैसे की जा सकती हैं.....? नतीजे स्वरूप दुखों के महा भंडार रूपी संसार में निकृष्ट जुनों विशेषों में अपने को झोंक दिया - इन चालाक रूहों ने बार - बार जमने और मरने हेतु.....! इन दुखों का निवारण कैसे हो सकता हैं.....? केवल एक ही रास्ता विशेष हैं स्वंय को "सत्य के निकट पहुंचने हेतु निरंतर प्रयन्नशील रहना.....!" अब विचारों की यह काम आप कब कर सकते हो.....? केवल एक

दुर्लभ मनुष्य जन्म विशेष में - फिर यह अनंत जन्मों का कर्म रूपी बोझा आप एक ही जन्म शेष में कैसे ढोह लोगे - एक - एक नेगेटिव विचार सहित व्यवहार का आपको विद इंटरेस्ट मोल चुकाना हैं - वो भी ऐसे जैसे बच्चा शहद को चाटता है.....! और आप हैं कि केवल शक्लों विशेषों के दर्शन करके ही स्वयं को मुक्त विशेष साबित करने में लगे हो.....? शक्लें विशेष भी ऐसी कि उनके पास भी स्वयं का कुछ नहीं है किसी की भी दी हुई भीख पर आसमान में उड़ रहे हैं - इन्हें भी सत्ता - साधन का इतना अंह है कि भूले बैठे हैं कि सब कुछ ऐसे ही चलता रहेगा.....? अरे मूर्ख प्राणी एक घड़ी अवश्य ही आएगी जब यह मिली भीख भी एक दिन खत्म हो ही जाएगी फिर तेरा क्या बनेगा.....? क्योंकि जिंदगी भर तो समाज को गुमराह ही करते रहे स्वंय का कुछ पुरुषार्थ सत्य के प्रति तो कमाया ही नहीं.....? अब कटोरा या तेल का पीपा लेकर मिन्नते भी करोगे तो भी सोचो भीख कहां से मिलेगी और कौन देगा - देगा भी तो क्या देगा.....? सोचो क्या लफ़्ज़ विशेष नाम हो सकता है.....? जिंदगी भर गुड़ - गुड़ करते रहो - जपते रहो - ध्यान करते रहो - गाते रहो - नाचते - कूदते रहो.....! क्या कभी भी केवल इस क्रिया को ही बार - बार दोहराने वाले का मुंह मीठे स्वाद रूपी गुड़ विशेष को चख पाया है.....? और आप हैं कि गद्दी बिछा कर बैठे हैं दुनिया को कोई दुर्लभ ज्ञान उसे देने हेतु - कि आप भी यही जपो - गाओ - नाचो -

कूदो आप के भी सब कुछ हरा - हरा - शांत - सुख हो जाएगा.....?

"आंख मीच मग सूझ ना पाई - ताही अनन्त मिले किम भाई.....!"

"दोऊ लोचन मूंद कै बैठि रहिओ बक ध्यान लगायो - नात फिरयो लिये सात समुद्रन लोक गयो - परलोक गवायो।"

अर्थात इन संसारिक कर्मकाण्डों उपायों में ही अपना कीमती जन्म विशेष खर्च कर दिया - संसार तो डूबा ही - आगे का भी कुछ नहीं हो सकता क्योंकि कुछ उधम - पुरुषार्थ सच के प्रति तो किया ही नहीं.....? अगर रत्ती भर भी प्रेम होता तो उसकी तलाश अपने ही घर में करता.....? जिसके लिए ना तो किसी सामग्री की जरूरत हैं - ना किसी दीक्षा-भीक्षा की - ना ही किसी स्थान विशेष की - ना किसी और को देखने की - और न ही किसी के पीछे भागने चढ़ावे चढ़ाने की - न ही मंत्रों - शब्दों-श्लोकों - बाणियों - तीर्थों इत्यादि वगैरह - वगैरह कर्मकाण्डों की जरूरत है तो केवल है आत्मा तेरी स्वयं की - अपने को मन की लज्जतों से अलग कर और संसारिक व्यवहारों से - साबित कर अपने को कि तू सच में अपने को बनाने वाले मूल विशेष की आशिक विशेष हैं.....? "रंडी मत बन सुहागिन बन.....!" बस इतनी सी वफा कमा ले शेष सब कुछ अपने खसम विशेष पर

छोड़ दें.....? वह महासमर्थ अवश्य ही तुझे अपने हरम विशेष तक ले ही जाएगा "तुझे पाक पवित्र करके.....!" अब तू क्या कर रहा हैं जड़ प्रकृति के चेतन अंग का गला काट उसको कत्ल करके उसकी उसे मुर्दा बनाता हैं और फिर उसे जड़ - पत्थर - जल - पोथियों इत्यादि पर अर्पण कर नाचता - कूदता हैं - फिर प्रसन्न विशेष होता हैं कि मैंने प्रभु को खुश कर लिया.....? अरे मूर्ख क्या खस्म के मुंह पर भी तुझे कुछ मूर्ख सा लिखा हुआ हैं - ऐसा तूने पढ़ - देख लिया है तो तू अवश्य ज्ञानी अवतारी आत्मा विशेष हैं.....! परम चेतन अपने ही बाग के चेतन फूल को मृत्यु प्रदान करने वाले की ऐसी अनोखी भेंट देख - समझ कर कैसे स्वीकार कर प्रसन्न हो सकता है - इसे तो तू ही महा ज्ञानी समझ सकता हैं.....! (चेतन फूल को मृत कर जड़ पर चढ़ाना अनोखा कर्मकांड विशेष है.....!)

"अंधे - गूंगे अंध - अंधार । पोथिया - पाथर लै पूजे मुगध गंवार । ओह जा आप डूबे - तुम कहां तरणहार.....?"

संत तुकाराम द्वारा लिखी वाणी को ईर्ष्यालु ब्राह्मण समाज निजी स्वार्थ हेतु कभी भी नहीं स्वीकारा - वो सारा का सारा मार्गदर्शन डूबा दिया गया । यही हाल दस गुरुओं द्वारा प्रत्यक्षित वाणी रूपी ग्रंथ के साथ भी किया गया है ईर्ष्यालु परिवार के सदस्यों द्वारा । इस लिखित वाणी रूपी मार्गदर्शन को एक

सदस्य ने अपने कब्जे में कर रखा था और उसे अपने निजी संपत्ति बनाकर लोगों को दर्शन करा अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु चढ़ावा वसूलता था और दावा करता था कि लोगों की इच्छाएं - कामनाएं पूरी करवाता है.....! इससे बड़ा पाखंड और क्या हो सकता हैं लोगों को गुमराह करना और अरदासो द्वारा समाज को सुख बांटना.....? मक्खन शाह जबरन इस ग्रंथ को छीन लाए और तेग बहादुर जी के आगे प्रत्यक्ष किया - तब उन्होंने इसे स्वीकार करने से इंकार कर दिया यह कहकर कि यह उसकी रोजी - रोटी है हम किसी के पेट पर लात नहीं मारना चाहते हैं अतः इसे वापस उसे लौटा आओ । तब सभी ने इसे लौटाने से इंकार कर दिया यह कहकर कि यह संगत की प्रॉपर्टी है जो केवल आप अधिकारी के अधिकार में ही पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं । तब उन्होंने एक नाव में इसे रखकर संदेश भेज दिया कि वह आकर इसे ले जाएं । उसके बाद संगत को यह मार्गदर्शन मिलना बंद सा हो गया । जब अति हो गई और बहुत ज्यादा ताने मारे जाने लगे तब फिर गोबिन्द सिंह जी के उपराले के कारण संगत की भलाई तथा पूरे समाज के मार्गदर्शन हेतु उन्होंने इस वाणी रूपी मार्गदर्शन को एकांत हो फिर से लिखित करवाया.....! यह लिखित भी जब मुस्लिम हकूमत से टकराव हुआ तब लुप्त हो गई - फिर एक शिष्य जो इस की जिल्द बनवाने हेतु ले गया था - सफर में इसे लिखता रहा - इन्हीं लिखेता में से एक बाद में मिली तथा

फिर उसका प्रचार हुआ, बात यहां भी खत्म नहीं हुई - पहले कुछ परिवारिक सदस्य ही इस पर कब्जा किए बैठे थे - अब संसार संसारिक रूहें ब्राह्मण सोच से ग्रसित अपने निजी लोभ - स्वार्थों - इच्छाओं -कामनाओं को पूरा करने की खातिर इस मार्गदर्शन पर अपना निजी अधिकार - कब्जा विशेष कर के पूरे समाज को गुमराह करने में निरंतर दिन - रात मशगूल विशेष हैं । इन का गुमराह करने वाला जहरीला फन इतना चौड़ा और बड़ा है कि कोई भी इनके सामने सिर उठाने की कोशिश करने से भी अपनी जान -माल की सुरक्षा हेतु कतराता ही हैं.....! जरा सोचिए इन श्लोकों को लिखने वाली रूहों महानो ने इसमें अपने नाम की एक मात्रा तक नहीं डाली और फिर यह ब्राह्मणी सोच इनके नामों का प्रचार करने जपवाने में डूब रही हैं - किसी निर्बाण कीर्तन की बात समझाई गई है और किस कीर्तन का प्रचार हो रहा है.....? जिनके नाम की मात्रा तक नहीं है उन्हें प्रभु से ऊपर "सत + गुरु" साबित किया जा रहा है - सत्य जो तीनों कालों में निरंतर प्रत्यक्ष विद्यमान रहता है तथा गुरु जो मार्गदर्शन करता है सुरक्षा के साथ लगातार सहारा देता हुआ । कोई महानतम से महान आत्मा भी कभी भी एक वक्त में केवल एक ही जगह विशेष पर उपलब्ध हो सकती हैं । केवल प्रभु रूपी वाणी (रागमई - सुगंधित - प्रकाशित आवाज विशेष) ही तीनों कालों में निरंतर हर जर्रे विशेष में विद्यमान विशेष रहती हैं.....! ना यह घटती - बढ़ती हैं और ना

ही यह कहीं आती - जाती हैं क्योंकि इस एक के सिवा और कुछ है भी तो नहीं - इसी लिए केवल एक यही निरंतर आधारभूतिक सत्य विशेष हैं । और यह इन रूहों के केवल नाम जपा कर ही रिद्धियों - सिद्धियों इत्यादि सभी सुखों विशेष विशेषो को आपके घरों में जबरदस्ती घुसवा देने का दावा विशेष करते हैं.....? आज जन्म हुआ आज गद्दी मिली आज परलोक सिधार गए इत्यादि - इत्यादि पर ही आपके घर सभी खुशियां "बाई कोरियर" पहुंचा दी जाती हैं.....! और आपको इन सभी पर पूरा भरोसा - यकीन भी है - अगर जरा भी सोचा - विचारा होता इस लिखित वाणी पर तो क्या यह ब्राह्मणी सोच दोनों हाथों से आपके इस कीमती जन्म मनुष्य को लूटने - डुबाने हेतु आप पर हावी हो सकती थी.....? इस पर टॉयलेट सीट पर बैठे वक्त जरा मोबाइल को साइड़ पर रखकर कुछ पल तक के लिए ही सही जरूर विचारियेगा.....! और आगे आपका क्या होने वाला है जानने की कोशिश करिएगा.....? अवश्य ही आप कुछ जानकारी नेट से भी हासिल कर सकते हैं.....!

एक सीधी सी मिसाल इस वाणी से ही जान लो "सब ते वड्डा सत्गुर नानक जिन कल राखी मेरी" - आप को हमेशा याद रखना चाहिए कि इस लिखित वाणी में किसी भी लिखने वाले का नाम नहीं है एक बार भी नहीं । परिवार वाले इस में अपना नाम डाल कर प्रचारित करते थे तथा वाह - वाही लूटकर चढ़ावा

कबूलते अपनी महत्ता साबित करते थे तथा ब्राह्मणी सोच के अनुरूप इसके अर्थ - विशेष भी अपने स्वार्थों को पूरा करने हेतु ही भिन्न - भिन्न प्रकार से प्रचारित करते तथा अर्थ का अनर्थ का ही स्वरूप हैं गद्दी बिछा स्वयं को सतगुरु परिभाषित करना.....? जब आप नहीं विचारोंगे तो सामने वाला अपना उल्लू तो सीधा करेगा ही.....! सबसे बड़ा कौन हैं - जो निरंतर आपकी रक्षा - सुरक्षा कर - सुरक्षित रख सकता है - केवल एक ही जिसने इसे बनाकर धारण कर रखा हैं । अब अर्थ क्या बनता हैं बिना किसी भी विचार - भाव के की सबसे बड़ा गुरुओं में गुरु सतगुरु नानक हैं जिस से मेरी सुरक्षा निश्चित हैं - यह सोच तो मनुष्य जन्म की कीमत के सामने तो अनर्थ लफ्ज़ के जर्रे में भी नहीं समा सकती फिर आप तो पूरे के पूरे कुल - परिवार - समाज सहित इसमें डूबते जा रहे हो और समझ रहे हो पूर्ण मुक्त विशेष.....? पारिवारिक मिलावट को रोकने हेतु इसे गिनती में कलम बंद किया गया और इसमें केवल नानक लफ्ज़ को इसलिए डाला गया कि और कोई भी इस का दुरुपयोग ना कर सके । जरा सोचो क्या यह स्वयं को प्रभु आशिकी में मिटाने वाली रूहें भूल से ही अपनी महत्ता को बयान करना पसंद करेंगी.....? तेरे जन्म से पहले ही प्रभु तुझे अपना नाम रूपी जून देता है अर्थात धारण करता है तभी तो तू जठराग्नि की तपिश में भी सुरक्षित बचा रहता हैं - "मातृ गर्भ में आपणा सिमरण दे कर राखे" और एक तू हैं

की जन्म लेते होते ही तुझे दलों की जरूरत आन पड़ती है - ब्लेसिंग्स की - नाम की - अमृत की - इत्यादि इत्यादि जबकि बाणी लिख कर मार्ग - दर्शन कर रही हैं कि यह दुनिया के लोगों एक परमात्मा की शरण में आ जाओ अगर अपना कल्याण चाहते हो तो.....! "नानक कहत पुकार के गह प्रभ शरणाई" इन लफ्जों में ऐसा क्या भेद विशेष छिपा है जो आपको समझ में नहीं आ रहा और आप हो कि नानक श्रेणी जैसे महानतम इत्यादि - इत्यादि लफ़्ज़ों विशेषो - भूत कालीन रूहों इत्यादि के साथ ही लटकना पसंद कर रहे हो यह कसम खाते हुए कि आप कितने भी सिंपल हो लो हमें तो बस एक ही रास्ते विशेष पर चलना हैं - वह भी शॉर्टकटस में - जो कि केवल सीधा घौर नर्कों विशेषो कि सैर करवाने में ही घौर समर्थ विशेष हैं.....! सृष्टि की सभी रूहे अपनी कमाई - खर्च के आधार पर ही निरंतर इस सृष्टि चक्कर में कपड़े बदलते हुए नीचे से ऊपर - ऊपर से नीचे घूमती रहती हैं बिना रुके.....! यही सत्य है जितना जल्दी समझ लो आपके हित में वही ठीक है ।

एक मिसाल मिलती है एक बार उस काल के इंद्र को उस के अंह ने उसे डस लिया - उसकी आंखें खोलने हेतु एक पुरातन ऋषि से आग्रह किया गया - तब ऋषि ने इंद्र के सामने एक कीड़ों की कतार दिखाकर सवाल रखा कि किसी भी एक कीड़े पर अपनी उंगली रखें - जब इंद्र ने ऐसा किया तब ऋषि ने

उस कीड़े के पिछले जन्मों का वह हिस्सा अपने दिव्य ज्ञान से प्रत्यक्ष कर दिखाया - जब वह इंद्र के सिंहासन पर विराजमान था और तीनों लोकों का मर्यादित पालन कर रहा था - यह देख इंद्र हैरान हुआ और उसे अपने अंह का एहसास हो गया और ऋषि से क्षमा याचना करने लगा.....! इसी तरह की एक मिसाल राम काल की भी लिखी गई है "कलंजर का महंत" जो उस वक्त एक कुत्ते की जून में भुगतान दे रहा था । उसने स्वयं प्रभु दरबार में स्वीकार किया कि वह पूरी मर्यादा से अपनी महंती निभा रहा था और केवल शारीरिक गुजारे मात्र हेतु ही "चढ़ावे" से अन्न ग्रहण करता था उसी के फल स्वरुप आज वह इस निकृष्ट योनि में भ्रमण कर रहा है । आज इन धर्म रूपी महंतियों के लिए तो खून की होलीयां खेली जा रही हैं.....? प्रजापालना के नाम पर "नंगा बलात्कार" निरंतर समाज के हर अंग का प्रकृति समेत सभी का "गैंग रेप" के रूप में पूरा का पूरा परिवार संबन्धों सहित समाज विशेष के रूप में घोर लिप्त विशेष हैं.....! सरकारी नौकरी के लिए क्यों कत्लेआम होता है - केवल चढ़ावा ठूसने के बाद भी सिस्टम रूपी सत्ता का सुरक्षित आश्रय मिलना.....! यहां पूजा और सत्ता दोनों ही बराबरी की होड़ में होशगुम हैं.....! "और आगे बढ़ना जाने हेतु"

एक ब्राह्मण के कुत्ते के सिर पर डंडा मारने के अपराध में प्रभु दरबार में कुत्ते ने शिकायत दर्ज की थी कि बिना मेरे कुछ

भी किये इस ब्राह्मण ने मुझे लाठी मारी - तब उसी से प्रभु ने पूछा कि इसे क्या सजा दी जाए - तब कुत्ते की जून में स्थित अविनाशी आत्मा विशेष ने अपनी हालत विशेष का विचार करते यह निर्णय बताया कि इसे कलंजर का महंत बना दो तब सभी दरबार में हंसने - ठहाके लगाने लगे कि यह सजा है या वरदान - तब प्रभु ने आत्मा से आग्रह किया कि वह इस दुविधा का कारण बताएं - तब महंत रूपी आत्मा ने यह भेद बताया - यह सुन सारे दरबार में सन्नाटा छा गया - यह श्री "प्रभु राम की रामलीला ।" आज कोई क्या कोई एक भी कमाई वाली रूह विशेष हैं जो यह सत्य साबित कर सके.....? अगर होती तो क्या हर दूसरे घर में जादू - टोना - गुरु - सतगुरू - नेता - धर्म - मत - डेरे - मार्ग -स्थान - इत्यादि - इत्यादि जन्म ले रहे होते और बाकी के भी क्या इसी मार्ग पर चलने हेतु एक दूसरे की गर्दन काट रहे होते.....! शायद नहीं.....!